दादी ने विश्व परिवर्तन के अभियान को शिखर पर पहुंचाया...

ऐसे तो संसार रूपी बेहद नाटक में हज़ारों मनुष्यात्माएं किरदार अदा कर फिर चली जाती हैं। लेकिन कुछेक आत्माओं का पार्ट विशेष रहता है। जो आत्मीय गुणों को साकार कर दूसरों की जीवन यात्रा में सहयोग प्रदान करते हैं। ऐसे विराट हृदयी दादी जी के पुण्य तिथि पर हमने यही देखा-समझा-जाना कि दादी के सानिध्य में आते उनकी निश्छल दृष्टि, निर्मल भावनाएं व खुशनुमा सूरत ने हमारे हृदय को स्पर्श किया। यह अनुभव विश्व की लाखों आत्माओं का है चाहे वो उनसे कितनी बार भी मिली होंगी। दादी की निर्णय शक्ति जबरदस्त रही। उनके व्यक्तित्व में यह विशेष बात थी कि जिस भी सेवा कार्य में उन्होंने उम्मीद रखी उसका प्रारूप उसी तरह बन गया। बात 90 के दशक की है। जब ज्ञानसरोवर के निर्माण का कार्य आरंभ करना था। तब दादी ने मधुबन के भाईयों मध्य यह बात रखी कि इस कार्य को कौन सम्भालेगा। यज्ञ इतिहास में यह पहला ऐसा विशाल

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

प्रोजेक्ट था। इस प्रकार के कंस्ट्रक्शन का इससे पूर्व किसी को अनुभव नहीं था। बस परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य को विशालता प्रदान करने के लिए प्रथम नींव डाली जा रही थी। ऐसे में दादी ने मुझे इस कार्य को क्रियान्वित करने का सुअवसर प्रदान किया।

संस्थान के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि आपको ज्ञान सरोवर के निर्माण कार्य को देखना है। मुझे इस प्रकार के कार्य के बारे में कुछ पता नहीं था, कैसे होगा, बस ईश्वरीय कार्य की उस बेहद योजना में हमारी विशेषताओं की अंगुली लगाने का भाग्य बाबा से प्राप्त हुआ। दादी की निर्णय शक्ति व विश्वास के साथ उम्मीद रखने का यह मेरे जीवन का अनुभव था।

परमात्मा के विशाल परिवर्तन के कार्य को आगे बढ़ाने में दादी का पार्ट कितना अहम था यह शब्दों में बताना कठिन है। लेकिन दादी विश्व में ईश्वरीय पताका फहराने के निमित रहीं।

दादी हर एक की विशेषता को एक सूत्र में पिरोकर यज्ञ सेवा के कार्य में लगाने में माहिर थीं। किसी की भी कमी को खत्म करना और उस आत्मा में खुशी का बल भरकर सेवा में लगाना, ऐसे दादी जैसा कुशल प्रशासक मैंने कोई नहीं देखा। दादी ने जब से परमात्मा के कार्य को आगे बढ़ाने का जिम्मा लिया उनके जीवन में एक बात स्पष्ट रही कि दूसरे आगे बढ़ें, बस यही उनके व्यक्तित्व की विशेषता रही या ताकत रही इस विशाल संगठन को बनाने में। कार्य कितना भी बड़ा हो उसे पर्वत से राई बना देना तथा निश्चिंत रहना उनकी आत्मिक ऊर्जा की परिचायक थी। सेवा साथियों के उमंग-उत्साह को बनाये रखना यह उनकी खूबी थी। हम पढ़ा करते थे श्रेष्ठ लीडर वह जो स्वयं लाइट रहे और साथियों को भी लाइट रखे। यह क्वालिटी दादी के व्यक्तित्व से नज़र आती थी।

एक बार जब ज्ञानसरोवर के निर्माण कार्य में किसी कारणवश रूकावट आई। दादी ने कहा कि योग करो, सब रूकावटें खत्म हो जाएंगी। सचमुच सबने योग किया और रूकावट ऐसे खत्म हो गई जैसे कि थी ही नहीं। दादी की ईश्वर के प्रति जबरदस्त आस्था एवं विश्वास उनकी शक्सियत को हर क्षेत्र में निखारता नज़र आता रहा। ईश्वरीय कार्य में कई विघ्न, रूकावटें व समस्याएं आईं परन्तु एक परमात्मा में आस्था रूपी शस्त्र के सामने सबकुछ नाकामयाब रहे। दादी की संकल्प शक्ति में दृढ़ता सदा झलकते देखी। मिलिनियम मिनट फॉर पीस का प्रोजेक्ट, ग्लोबल पीस जैसे विश्व व्यापी सेवा कार्यों को इतना सुचारू रूप से सफलता की मंज़िल तक पहुंचाना यह दादी जी की ही हिम्मत व विश्वास का प्रतिफल था। इन सेवाओं से ही विश्व में ईश्वरीय कार्य का परदा खुला। दादी को 'विश्व शांतिदूत' के सम्मान से नवाज़ा गया।

दादी के व्यक्तित्व में सबके प्रति शुभ व कल्याण की भावना कूट-कूटकर भरी हुई नज़र आती थी चाहे कैसा भी व्यक्ति सामने आये उनमें उम्मीदें जगाना तथा विश्वास भरना जैसे कि उनका नैचुरल गुण था। दादी के सम्मुख जो भी आया वह खाली हाथ नहीं लौटा। जो भी उनसे मिला वह उन्हें आज तक भुला नहीं पाया।

एक बार मैं दादी के साथ बैठा हुआ था, इतने में ही एक भाई यज्ञ कारोबार के सिलसिले में दादी से बात करने आया और किसी बात के लिए कुछ ऊंचे आवाज़ में बात करके चला गया। मैंने देखा दादी के शांति एवं सौम्यता की कांति लिए चेहरे पर रिंचक मात्र भी अंतर नहीं आया। दूसरे दिन क्लास के बाद दादी जब आंगन में बैठे थे तो वहाँ से वही भाई निकल रहा था तो दादी ने उन्हें बुलाकर बड़े ही स्नेह व विनम्रता से कहा कि दादी ने आपकी बात समझ ली है आप निश्चिंत होकर अपने कार्य में जुट जाओ। हमने देखा कि दादी के निर्मल चित्त पर किसी की भी गलती ठहरती नहीं थी। कार्य के पहले व कार्य के बाद भी वही न्यारेपन व प्यारेपन का सुंदर बैलेंस दिखाई देता था। नो इफेक्ट और नो डिफेक्ट। ऐसी प्रभु रत्न दादी की पुण्य तिथि पर हमारे दिल से यही उद्गार निकलते हैं कि हे निर्मल, निर्मान, निर्माण की धनी आपको शत्-शत् श्रद्धासुमन अर्पित।

साकार बाबा का स्नेही आकार लिया दादी ने

साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली(ईश्वरीय महावाक्य) बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरंत कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूंद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूंदें पड़ रही हैं, एक-एक बूंद ज्ञान-मोती का रूप धारण करती जा रही हैं। अतः हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएं सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षायें भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई गलती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर गलती नहीं सुनाते थे। मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे-ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। गलती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चेम्बर के नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट-से जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा का शिक्षा देने का तरीका ही निराला था। वे कभी गलती करने वाले को उनकी गलती बुलाकर नहीं बताते थे। सबकुछ बाबा मुरली में सुना देते थे। जिसने ऐसा किया होता उसे समझ आ जाता था कि ये मेरे लिए है। वैसे ही दादी ने उसी परम्परा को अपनाया इसीलिए जैसे कहते थे कि 'मेरा बाबा', वैसे ही सभी कहते थे 'मेरी दादी'।

चलाई, वह भी बाबा के सामने चेम्बर में आ गया तो उसका मन तो अंदर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह न दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक गलती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, गलती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना एहसास हो जाता था कि भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

दादी जी दिल में किसी की, कोई बात नहीं रखती थीं

ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उल्हना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत इस प्रकार, सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर खुशी न जाए।

संस्कारों पर 'शेर' होकर रहो

सदैव अपनी तकदीर का सितारा चमकता रहे तो यह बोल कभी नहीं निकलेंगे कि - हाय मेरी तकदीर। जो तकदीर में होगा... यह हैं भक्तों के बोल। मैं अपनी तकदीर क्यों पीटूं? मेरी तकदीर का सितारा सदा चमकता रहे। हमारा यादगार आसमान में चमक रहा है, मैं फिर क्यों कहूं हाय मेरी तकदीर!

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

मेरी स्थिति मेरी प्रॉपर्टी है, मैं कोई के दो बोल पर अपनी स्थिति क्यों बेचूं? मैं किसी के दो बोल से हज़ार रूपया नहीं देती तो किसी के भाव-स्वभाव में अपनी स्थिति को क्यों बेचूं? जो अपनी स्थिति को खो देते वह दिलबेचू बन जाते।

मैं ऐसा क्यों कहूँ जो मेरा पार्ट होगा!

हम माला में पिरोने वाले मोती अगर यह शब्द बोलते हैं तो ज्ञानी और अज्ञानी में अन्तर ही क्या रहा! अपनी तकदीर को कभी नहीं भूलो। अगर कभी कोई गलती भी होती तो उसको रियलाइज़ कर हाई जम्प दो। हमारी स्थिति है हाई जम्प की। हमें देना है हाई जम्प और करते रहें हाय-हाय तो हाई जम्प कब देंगे?

मैं हमेशा देखती कि मैं कहाँ और अज्ञान कहाँ। जब हम अपनी स्थिति में रहते तो अज्ञानी हमसे बहुत दूर हैं। उन पर हमारा रहम है, तरस है। लेकिन अपने संस्कारों के ऊपर रहम नहीं करना है। संस्कारों को मिटाने के लिए धर्मराज बनो। संस्कारों पर शेर होकर रहो। संस्कारों को मिटाने के लिए बाबा को नहीं पुकारना है। बाबा ने मुझे सब कुछ दे दिया है। बाबा मेरे साथ हैं। जब बाबा को सामने नहीं देखते, बाबा को अबसेन्ट करते तब हाय हाय करनी पड़ती। बाबा को अपनी बुद्धि में, अपने नयनों पर बिठाकर रखो।

कई बार जब बाबा कहता मेरा राइट हैंड धर्मराज है, तो मैं सोचती कि हम सबका भी राइट हैंड धर्मराज है। उस राइट हैंड को सदा साथ रखो तो सब संस्कार शांत हो जायेंगे। प्यारे बाबा के गुण गाओ और उनकी मस्ती में रहो। बाबा के साथ रहो। बुद्धि में याद रहे हमें समान बनना है। नीचे से ऊपर जाने में श्वास फूलता, सदा ऊपर रहो तो सीढ़ी मर्ज़ हो जायेगी। कभी भी अपने बाबा को पुकारो नहीं। पुकार हमारी अधीनता है। बाबा को साथी रखो तो सदा आराम है।

कोई थोड़ी-सी बात में तंग हो जाते हैं फिर कहते बाबा मैं तो तंग हो गया। इसमें बाबा क्या करे। यह भाषा ही हमारी क्यों निकलती। जब हम जानते हैं यह सब ड्रामा में नूंधा हुआ है फिर यह बोल निकलना भी रॉन्ग है। विश्व के मालिक अपने मालिकपन के नशे में रहो, नीचे नहीं आओ। जैसे अपनी प्रॉपर्टी अपनी पर्सनल तिज़ोरी में रखते हो, वह किसी की दो बातों से गंवा नहीं देते। ऐसे मेरी स्थिति मेरी प्रॉपर्टी है, मैं कोई के दो बोल पर अपनी स्थिति क्यों बेचूं? मैं किसी के दो बोल से हज़ार रूपया नहीं देती तो किसी के भाव-स्वभाव में अपनी स्थिति को क्यों बेचूं? जो अपनी स्थिति को खो देते वह दिलबेचू बन जाते। दिल बिक गई माना स्थिति बिक गई। सर्विस हमारी खुशी का साधन है, सर्विस में बिजी रहो। अपने को न नींच नमाओ(नींचा नहीं समझो) न अभिमान में आओ। निर्माणता मेरा गुण है, रहना सदैव मस्ती में है।

दादी से साकार बाबा की भासना हमें आती...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

दादी प्रकाशमणि को मैं बचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता सम्पन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुंज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बनाए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैम्पल बनकर रहीं। जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियां बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प-बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी, उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहां-वहां स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ-परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएं भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी(प्रकाशमणि)मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियां दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही।

सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, कैरेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। सन् 1977 में दादी हमारे पास आईं। वहां ठण्ड बहुत होती है, इसलिए मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा मेरे कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे ये भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।